ओंकारश्री

महावीर का महावीरत्व

वीरता, आत्मा का जीवट है। अनन्त शक्ति धर्मा आत्मा का साक्षात्कार जिसने भी साधा वह शौर्यवान बना, 'महावीर' बना। उसे बनना कुछ नहीं था, और वह कुछ नहीं बना। सहज बन गया। जो सहज होगा वह श्रद्धा शील व विनीत होगा। काल-सत्य का आग्रही बनकर उसे सत्याग्रह नहीं करना। कारण साफ कि महावीर का समय आग्रही अनुनय विनय का नहीं, असहिष्णुता, हिंसा एवं आग्रही हठ का था, शास्त्रीय दम्भ का था। महावीर चला अकेला, उसे न शास्त्र ढ़ोना था, न शास्त्राश्रयी होना था।

वह चला निर्मल मन से। चैतनन्यता चित्त की लिए वह प्रशान्त भाव से उठता, बैठता, सोता, जागता, चलता, ठहरता हर क्षण संवादित रहा, उस आत्मा से जो रमी-रची-बसी थी देह में विदेह स्वरूप। वह लग्नपूर्वक संलग्न रहा अपनी उस अन्तर्यामी चेतना से जो अपने साधक को निर्ग्रन्थ पद देती है निर्बन्ध स्वरूप में स्थित करते हुए।

वर्धमान से महावीर का सम्बोधन उसे कब मिला? इसका भान हुआ ही नहीं उसे अपने काल में। उसे भान हुआ, आत्मा से आत्मा को देखने का, तलाशने का। यह शौर्य था उसकी अंत:स्फूर्त साधना का। हाँ, उसने जिस अहिंसा को भगवती कहा, उसका वाहन सिंह है, इस भान के साथ उसको सम्यग्ज्ञान, दर्शन एवम् चारित्र्य का सिंहत्व जागा। सिंह चलता है अकेला। सहज समझने का सरल सूत्र यही है कि महावीर ने साधुत्व व श्रावकत्व को पहली बार कषायासुरों से जूझने के पाँच महाव्रतों के सूत्र धारे अभय मंत्र साधते हुए।

महावीर की साधना कैसी थी?

माना कि शास्त्रं ज्ञापकन तु कारकम्– पर हम तो काल के महाकारक महावीर की साधना की बात करते आचारांग शास्त्र की वीर-सूत्र वाणी की ज्ञापना प्रस्तुत करते हैं कि कैसी थी महावीर की साधना? कहता है शास्त्र :

महावीर की साधना थी–

- काँस्य पात्र की तरह निर्लेप,
- शंख की तरह निरंजन, राग रहित,
- जीव की तरह अप्रतिहत,
- गगन की तरह आलम्बनरहित,
- वायु की तरह अप्रतिबद्ध,
- शरद ऋतु के स्वच्छजल की तरह निर्मल,
- कमल पत्र की तरह भोग निर्लिप्त,
- कच्छप की तरह जितेन्द्रिय,
- गेंडे की तरह राग-द्वेष रहित एकाकी,
- पक्षी की तरह अनियत विहारी,
- भारण्ड की तरह अप्रमत्त,
- उच्च जाति के गजेन्द्र की तरह शूर,
- वृषभ के समान पराकर्मी,
- सिंह की तरह दुर्द्धर्ष,
- सुमेरु की तरह परिषहों के बीच अचल,
- सागरवत् गंभीर,
- चन्द्रवत् सौम्य,
- सूर्यवत् तेजस्वी,
- स्वर्णवत् कान्तिमान,
- पृथ्वीवत् सहिष्णु,
- अग्निवत् दैदीप्यमान

महावीर अनियत विहारी-परिवारी भी!

मैं सुधी पाठक के अंत:ज्ञान के वीर धर्म के प्रति पूर्णत: आश्वस्त हूँ कि वे आचारांग शास्त्र की उक्त २१ महावीर साधना सरणियों के एक-एक सूक्ष्म पड़ाव को जांचते हुए निश्चित रूप से टोह लेंगे महावीर के साधना-शौर्य के लोकधर्मी कल्याणपथ को।

महावीर लोकवासी थे। जनवाणी के वाग्मी थे, मौन वाचा के परमवीर कि ब्राह्मण, श्रमण सब उनके सम्मुख रहे एक घाट पर अध्यात्म स्वाध्याय प्रतिक्रमण रत, सामायिकी साधते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सामयिक रहे सभी वर्ग के, समाज के। उस वीतराग की अन्त:वाणी का अपूर्व था मुखर मौन। यह वीरत्व अपरिमेय है अंतिम जैन तीर्थंकर की अद्यावधि मर्यादा का।

बहुत कुछ अनकहा कहा, महावीर वाणी की श्रुत परम्परा ने ऐसा खुला-खुला ऐसा खिला-खिला तीर्थंकर महावीर ही तो थो जो अपने समय में ज्योतिषी पुष्प से कहा–मैं परिवार के साथ हूँ।

- संवर निर्विकल्प ध्यानी है मेरा पिता,
- अहिंसा है मेरी माँ,
- ब्रह्मचर्य है भाई,
- अनासक्ति है बहिन,
- शांति मेरी प्रिया,
- विवेक है मेरा पुत्र,
- क्षमा मेरी पुत्री,
- सत्य है मेरा मित्र,
- उपशम मेरा गृह है,

ज्योतिषी मान गया वीरंकर महावीर का कि यह तो चक्रवर्ती भगवंत है कि जिसका धर्मचक्रप्रबल है, दिव्य है इसका आचार-छत्र!

सौदागर नहीं होता 'धम्मवीर'

महावीर की दशाब्दियों की मौन-वाचा को सूत्रों में पिरोते-पिरोते थक गए टीकाकार, भाष्यवेत्ता और मीमांसक।

उन सभी पुरार्वाचीन विद्वानों एवं निश्छल श्रावकों को अब आज के प्रतिभारत-भारत सहित विश्व के समस्त आध्यात्मिकों, वैज्ञानिकों को एवम प्रज्ञानियों को बता देना चाहिये कि महावीर की अहिंसा वाणी कायरों की नहीं यह अभया गिरा है मनुष्य ज़ाति के स्वाभिमान की रक्षा शक्ति है। शस्त्रों व शास्त्रों के सौदागर नहीं निष्काम कर्मयोगी होते हैं। तपस्वी महावीर, बुद्ध गाँधी कि कोई मार्टिन लूथर किंग। महावीर ने एक सिद्ध काल गणितज्ञ की सिद्धि पाई, यह युग-सत्य बीसवीं सदी के ढलते-ढलते पश्चिमी जगत ने जाना और माना। महावीर मेथामेटिशयन ने सीधी रेखा की ज्यामिति की वीरजयी लकीर खींची काल पटल पर कि बिन्दु अनन्त अणिमा धर्मी है कि जिसके बैन्दव-विस्तार से खिंचती है एक लकीर। महावीर की खिंची यह लकीर, लकीर के फकीरों के लिए नहीं।

यह काल रेखा की सीध है त्याग की, तप की, साधना-तन्मयता की, यह रेखा बोलती है, समय का स्वर पट खोलती है वीर भाव सहित कि–

पर वस्तु रमण / आत्मगुण घात / कैसा अहिंसक ?
पर पुदगल को स्व जो कथे कैसा सत्यवादी ?
बिना पुदगल आज्ञा करे ग्रहण – कैसा अचौर्यव्रत ?
जो पुदगल भोगे वह – कैसा ब्रह्मचारी ?
नाम रूप पद मूर्च्छापरिग्रही – वो कैसा त्यागी ?

–भँवरलाल नाहटा

महावीर नाम न बनावट का, न बुनावट का। वह तो प्रशान्त वीर हैं अहिसक कान्तिपथ का वह हर युग का, हर वर्ग का है।

महावीरत्व व्याख्या नहीं चाहता

हम व्यक्ति है हदपार। मनुष्य बनने की बातें बघारने से आदमी अनादमी ही बना रहता है। बनो मत कुछ। महावीर ने काल को सुना। गुणा अनन्त ज्ञान, भणा और चुना तो वो पंथ जिसे नहीं साध पाता हर कोई। बात एक दम सीधी सी यह है कि हम अपने से अपनों के मोह से, लोभ से, लाभ से कसकर बन्धे हैं। इस बन्ध से हुण्डा सर्पिणी काल खंड में विरला ही बचा है कोई श्रमण कि श्रावक कि कोई भक्त भावक। बन्ध की इस धक्कम पेल में हमारा पूर्व भव कर्म संचित पुण्य ले जाये यदि हमें धर्म सभा की ओर तो इस किंचित पुण्य योग को न गंवायें, हम झूठी प्रतिज्ञाओं से बचें, देखा-देखी की नामवरी से बचें तो हमें स्वाध्याय काल में निकटता मिलेगी जरूर महावीर की कि जिसके आगे और पीछे, ऊपर-नीचे जीवन जीने की 'धम्म कला' की गूंज है।

दिव्य ध्वनि को पानेवाले विरलतम सहयोगियों में अग्रणी महावीर भाव रूप विद्यमान है हम सबके हृदयों में। कषाय-पट खुलें तो अहसासें अपने आंतरिक महावीरत्व को, धर्म पुरुषार्थ को, सत्यमार्गी शौर्य को, आत्मा के ओजस और तेजस को हम पा ही लेंगे- इरादा पाक हो और लगन पक्की तो निराश नहीं करेगा हमें हमारा अर्हत्!

सूर्य की कोई परिभाषा नहीं। इस तरह वीर धर्मव्रती होकर यदि हम नहीं है अविश्वासी तो महावीरत्व की व्याख्या फिर क्या? मनसा, वाचा, कर्मणा जो भाव-हिंसा से मुक्त रहे वो महावीरत्व का धनी है। जो डरा हुआ है अपने कदाचार से वह महावीर का होता कौन है?

विश्व हितंकर तीर्थंकर थे महावीर

भगवान महावीर का समय, हिंसा-जन्य पशु बलियों का, क्षत्रपों के दुखद संघर्षों का, वैदिकी असहिष्णुता, सामाजिक दैन्य एवम घोर नास्तिकता का था। युद्धों व संघर्षों की अतिचारी हिंसा का सामना किया युग-कल्प महावीर ने आत्मा की प्रशान्त सहिष्णुता के बल पर। अकल्पनीय पीड़ायें सही क्रूर प्रतिपक्षियों

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

की, परिषहों के मर्मान्तक कष्ट सहे एक वीर कल्प धनी के रूप में नितान्त निर्भयता के साथ महावीर ने। कल्प का अर्थ समझ हम समझे महावीर की, अंतरात्मा की अजेयता को। नीति, आचार, व्यवहारी ज्ञान, तप, शील के कल्प गुणों के इस तपस्वी ने उपग्रह और दोषों का निग्रह किया संकल्पी साधक के रूप में।

अहिंसा, महावीर की बहुआयामी तेजस्विता पूर्ण युग क्रान्ति की वाहिका थी। चित्त में एकाग्रता के उत्तराध्यनन वर्णित (३१-१४) बीसों सूत्रों के असमाधि स्थानों कर उन्होंने परिहार किया। संवेग, निर्वेद, उपशम, अनिन्दा, भक्ति, अनुकम्पा एवम् वात्सलयादि आठों लक्षणों व रत्नत्रयी को जीवंत व्याख्या दी मौन वाचा की साधना सिद्ध करते हुए भयग्रस्त आकुल भारतीय समाज को भगवान महावीर ने।

महावीर बने राष्ट्र के अद्वितीय अहिंसक क्रान्तिवीर, ब्राह्मणों का हृदय जीता। श्रमण-ब्राह्मण एकता कायम की। हजारों साधु-साध्वियों व स्वाध्यायी श्रावकों की आध्यात्मिक जन शक्ति का जनाधार खड़ा किया। अपरिग्रह, अनेकांत और अहिंसा की अकार त्रयी की युग प्रचेता महावीर ने 'प्राणी मैत्री' का सौम्य स्वरूप दिया उसे, विश्व को। अणु अुण भौतिकी विज्ञानी अलबर्ट आइंस्टीन ने भ० ऋषभ से महावीर तक की जैनत्व शक्ति के सूत्र तलाशे विज्ञान के पटल पर।

गुप्तेश्वरनगर, उदयपुर

■

. श्यामसुन्दर केजड़ीवाल

शिक्षा का समाज में स्थान

किसी भी समाज एवं राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिये लोगों का शिक्षित होना आवश्यक है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य को उचित-अनुचित की पहचान होती है। शिक्षा के द्वारा भी मनुष्य को अपने धर्म एवं कर्त्तव्यों का ज्ञान प्राप्त होता है। निरक्षर व्यक्ति को पशु माना जाता है। संस्कृत के एक कवि ने निरक्षर मनुष्य को ''साक्षात पशु पुच्छ विषाणहीनः'' की संज्ञा दी है। अतः सुखी जीवन के लिये प्रत्येक व्यक्ति को साक्षर एवं शिक्षित होना आवश्यक है।

मनुष्य के व्यावहारिक जीवन में कदम-कदम पर शिक्षा की आवश्यकता पड़ती है। शिक्षित व्यक्ति व्यवसाय एवं रोजगार में भी सफल होता है। ज्ञान के अभाव में निरक्षर व्यक्ति को दूसरों पर आश्रित होना पड़ता है। आज हमारे देश में सरकार सर्व शिक्षा अभियान चलाकर देश के नागरिकों को शिक्षित करने का अथक प्रयास कर रही है।

यह दुखद स्थिति है कि आज भी हमारे देश में कुछ नागरिक अनपढ़ हैं। आज समाज और राष्ट्र का सबसे बड़ा दायित्त्व है कि सभी बड़ी लगन से निरक्षरता के उन्मूलन में लग जायें, क्योंकि राष्ट्र की उन्नति के लिये बच्चे-बच्चे को साक्षर बनाना होगा।

शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार सामाजिक कर्त्तव्य भी है। एक शिक्षित समाज ही धर्म-कर्म में निपुण हो सकता है। अतः समाज के सभी शिक्षित व्यक्तियों का कर्त्तव्य है कि वे समाज से निरक्षरता दूर करने के लिए यथासम्भव प्रयास करें। निरक्षर व्यक्ति को जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। अतः सम्पूर्ण समाज का साक्षर होना गौरव की बात है। अंत में हमारी यही इच्छा है –

''उचित शिक्षा के बिना सूना जहान है।
हम सब को शिक्षित करें, यही मेरा अरमान है।।''

■

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org